परिशिष्ट - 1

(1) आपका जन्मनाम क्या है ? उसे बदलकर आपने `मुद्राराक्षस' उपनाम कब और क्यों लिया ?

शिक्षा के अंतिम दौर तक मेरा पिता द्वारा रखा गया नाम सुभाषचन्द्र आर्य ही चलता था। पर 1953 या 54 में मैंने एक लेख लिखा था `प्रयोगवाद की प्रेरणा'। इसमें प्रयोगवाद के सीधे अंग्रेजी से नकल किए जाने के सुबूत थे। वह लेख तत्कालीन पत्रिका `युगचेतना' में छपा। संपादक के विवाद से बचने के लिए वास्तविक नाम में नहीं छद्मनाम `मुद्राराक्षस' नाम से लेख छापा। वह लेख इतना प्रसिद्ध हुआ कि यही नाम चलने लग गया। इसी नाम से मुझे नौकरियों के प्रस्ताव मिले।

2) आपके वंशवृक्ष सम्बन्धी संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

पितामह - श्री नंदकिशोर और पिताश्री शिवचरणलाल। पिता स्वाँग संपेड़ा नामक लुप्तप्राय लोकनाट्य के उस्ताद थे और उन्हें इसी के लिए उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। सन् 1983 में 82 वर्ष की उम्र में वे कहीं लापता हो गए।

माता - श्रीमती विद्यावती

भाई - प्रकाशचंद्र लिटिल (चित्रकार)

बहन - तीनों छोटी बहनें (विवाहिता)

पत्नी - श्रीमती इंदिरा (रंगमंच पर अभिनय, अब नहीं)

संतान - दो बेटे - रामीशीराब (28 वर्ष)

रोमेल (27 वर्ष)

3) आपको किन-किन बातों में रुचि है ?

1) सभी विषयों के अध्ययन में रुचि विशेषकर दर्शन, समाजशास्त्र, भारतीय वैदिक और संस्कृत साहित्य

2) फूल पौदे उगाने का शौक

3) रंगीन मछलियाँ, कुत्ते, बिल्लियाँ पालना

4) बीस वर्ष पहले तक मूर्तिकला का शौक।

4) क्या आपने विदेश यात्रा की है ? कब और किस सिलसिले में?

कभी नहीं की। पहले अपना देश देख लेना चाहता हूँ।

5) आजीविका के लिए आपने कहाँ-कहाँ नौकरियाँ की ?

1) ज्ञानोदय (मासिक) कलकत्ता में 1955 से 1958 तक सहायक संपादक

2) अणुव्रत (पाक्षिक) कलकत्ता 1959 से 1960 संपादक

3) आकाशवाणी दिल्ली (आलेख संपादक) 1963 से 1976 तक ।

6) आपको साहित्य में अभिरुचि कैसी प्राप्त हुई ?

1) कुछ तो पिता से । वे कवि और नाटककार भी थे गोकि बहुत अच्छे नहीं

2) प्रेमचंद का साहित्य (संपूर्ण) पढ़कर

3) इन्टरमिडिएट में एक सहपाठी सत्यव्रत सिंह थे (जो अच्छे लेकिन शास्त्रीय परंपरा के कवि है) उन्होंने निराला और प्रसाद पंत आदि को पढ़ने की प्ररेणा दी और कविता लिखने के लिए उकसाया।उन्हीं दिनों महादेवी , निराला जी, अमृतलाल नागर और डॉ.देवराज से परिचय हुआ और मैं पूरी तरह साहित्य में आ गया।

7) नाट्य क्षेत्र में आपका प्रवेश कैसे और कब हुआ ?

बचपन में गाँव में एक नौटंकी देखकर उसमें मैं नाचा था और पिता से पिटा था। बाद में अमृतलाल नागर और पिता के पास संग्रहीत पारसी नाटकों के कारण कुछ रुचि हुई। पर आकाशवाणी दिल्ली में नौकरी के

बाद कलाकारों से सीधा संबंध हुआ क्योंकि मैं नाटक विभाग में था। नाटककार और रंगकर्मियों से मित्रताएँ हुई। तभी 1964 से नाट्यलेखन शुरु किया।

8) अभिनेता के रुप में आपने किन-किन नाटकों में काम किया ?

नाटक का नाम	नाटककार	प्रदर्शन स्थल	प्रदर्शन तिथि
1) आला अफसर	मुद्राराक्षस	भोपाल , लखनऊ , दिल्ली	1977
2) डाकू	मुद्राराक्षस	लखनऊ, दिल्ली	1980
3) ईडिपस	सोफोक्लीज	लखनऊ	1982
4) (बचपन में यानी छठी-सातवी कक्षा में भी अभिनय)			

9) आपने किन-किन नाटकों का निर्देशन किया ?

नाटक का नाम	नाटककार	प्रदर्शन स्थल	प्रदर्शन तिथि
1) मरजीवा	मुद्राराक्षस	दिल्ली	1966
2) लुकछिपजाना	परितोष गार्गी	दिल्ली	1976
3) यात्री	मुद्राराक्षस (अप्रकाशित)	लखनऊ, आगरा, इलाहाबाद, बनारस	1977
4)उत्तरप्रियदर्शी	अज्ञेय	लखनऊ	1978
5) गिनीपिग	मोहित चैटर्जी	लखनऊ	1978
6) कुआनो नदी	सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	लखनऊ	1979
7) अभ्यास	सहयोगी लोबन	लखनऊ	1979
8) पगला घोड़ा	बादल सरकार	-	1983
9) साकेत	मैथिलीशरण गुप्त	-	1984

10) आपने असंगत नाटक क्यों लिखे ?

असंगत नाटक इसलिए लिखे कि उन दिनों विदेशी असंगत नाटकों से प्रभावित था।

11) आपके नाटक लिखने के प्रमुख उद्देश्य क्या है ?

नाटक लिखने का प्रमुख उद्देश्य तो आत्माभिव्यक्ति ही है। लेकिन वह आत्माभिव्यक्ति जो जनसामान्य की भी आत्माभिव्यक्ति हो। वैसे इन विषयों पर विस्तार से नाटकों की भूमिकाओं में लिखा है।

12) आपके मतानुसार `असंगत नाटक' की उचित परिभाषा क्या हो सकती है?

जो जीवन की असंगति को मनुष्य के आचरण और भाषा की असंगति के माध्यम से प्रकट करता है वह असंगत नाटक होता है।

13) आपकी पहली साहित्यिक कृति कौनसी है ?

एक उपन्यास `लिबिड़ो' जो 1956 में छपा था, पर वह बहुत खराब था।

14) नाटकों के प्रदर्शन के वक्त दर्शकीय प्रतिक्रियाएँ कैसी थी?

संभवत: अच्छी थी। `तिलचट्टा' के प्रदर्शन में नसीरुद्दीन शाह ने भूमिका की थी और वह खुद बहुत प्रभावित था। नसीर ने ही `मरजीवा' में भी काम किया था।

15) आपको मिले पुरस्कार / मान-सम्मान के बारे में लिखिए ।

1) हिंदी उर्दू कमेटी एवार्ड

2) सांस्कृतिक कार्यविभाग फेलोशिप

3) आकाशवाणी ऐन्युअल एवार्ड

4) उटपुट संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार।

† † †